ज्वार की उन्नत उत्पादन तकनीक

ज्वार में फ्लेवोनाइट्स फिनोलिक एसिड एवं टैनिंन जैसे एंटीऑक्सीडेंट्स उच्च मात्रा में होते है जो तनाव और शरीर की सूजन को दूर कर सकते हैं।इसमें प्रोलेमिन होता हैं, जो पाचन के लिए बहुत लाभदायक होता हैं।

ज्वार की अच्छी उपज देने वाली उन्नतशील किस्में कौन-कौन सी हैं ?

जवाहर ज्वार 104, जवाहर ज्वार-741,जवाहर ज्वार-938, सी.एस.बी.-15,सी.एस.एच.6, सी.एस.एच.14, सी.एस.एच.18, सी.एस.व्ही. 27, सी.एस.व्ही. 28, आर.व्ही.जे. 1862

ज्वार की बुवाई के लिए खेत की तैयारी किस तरह करें ?

2 बार कल्टीवेटर से जुताई करना चाहिए फिर हैरो चलाकर महीन बीज शैया तैयार करना चाहिए और खेत को समतल करना चाहिए, जिससे खेत मे पानी न रुक सके, साथ मे पानी के निकास की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए।

ज्वार की बुवाई का सबसे उपयुक्त समय क्या रहता है ?

मध्य जून से जुलाई अंत तक बुवाई का उपयुक्त समय रहता हैं।

ज्वार के बुवाई के लिए एक एकड़ में कितना बीज लगता है ?

3 किग्रा/एकड़ की आवश्यकता होती हैं।

ज्वार बुवाई से पहले बीजोपचार कैसे करें ?

बीज उपचार हेतु पहले कार्बेन्डाजिम (बाविस्टिन) 2 ग्राम/किग्रा बीज एवं फिर थायोमेथोक्सम 3 ग्राम/किग्रा बीज से उपचारित करना चाहिए। नाइट्रोजन की उपलब्धता बढ़ाने के लिए एजोस्पिरिलम 10 मिली/किग्रा बीज एवं फास्फोरस की घुलनशीलता बढ़ाने हेतु पी.एस.बी. कल्चर 10 मिली/किग्रा बीज से उपचारित करना चाहिए।

ज्वार बुवाई कौन सी विधि से करें ?

कतार या मेड़ नाली विधि से बुवाई करना चाहिए।

ज्वार बुवाई के लिए कतार से कतार एवं पौध से पौध की दूरी कितना रखे ?

ज्वार की बुवाई के लिए कतार से कतार की दूरी 45 सेंमी (17.72 इंच) और पौधे से पौधे की दूरी 12 से 15 सेमी (4.72 से 5.91 इंच) एवं 2-3 सेमी गहराई रखना चाहिए।

ज्वार से अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए कौन-कौन से खाद एवं उर्वरक कितनी मात्रा में और कब-कब प्रयोग करें ?

अंतिम जुताई के पहले गोबर की खाद 5 ट्राली प्रति एकड़ खेत में मिलाना चाहिए। ज्वार के लिए अनुशंसित नत्रजन:फास्फोरस:पोटाश अनुपात 32:16:16 किग्रा प्रति एकड़ है। जिसके लिए डाय अमोनियम फॉस्फेट (डी.ए.पी.) 35 किग्रा, युरिया 25 किग्रा एवं म्यूरेट ऑफ पोटाश (एम.ओ.पी.) 27किग्रा बुवाई के समय प्रयोग करना चाहिए। बुवाई के 30 बाद युरिया 25 किग्रा प्रति एकड़ प्रयोग करना चाहिए।

ज्वार में खरपतवार प्रबंधन कैसे करें ?

ज्वार फसल पर खरपतवार नियंत्रण हेतु कतारों के बीच व्हील हो या डोरा बुवाई के 15 से20 दिन बाद एवं 30 से 35 दिन बाद चलाना चाहिए।रासायनिक नियंत्रण में बुवाई के 0-3 दिवस में एट्राजीन 0.4 से 1 किलो प्रति एकड़ छिड़काव करना चाहिए।

ज्वार के साथ कौन-कौन सी अन्त:वर्तीय फसलें ले सकते है ?

अरहर, मूंग, सोयाबीन के साथ ज्वार की अन्त:वर्तीय फसल लाभदायक होती हैं ज्वार और अरहर की बुवाई 2:1 कतार के अनुपात किया जा सकता हैं।

ज्वार में कौन-कौन से कीट लगते है और उनका प्रबन्धन कैसे करें ?

तना मक्खी (शूट फ्लाई) : इसकी इल्लियां पत्तों के पोंगलों से होते हुए तनो के अंदर प्रवेश करती है और तनों के बढ़ने वाले भाग को खा कर नष्ट करती है। बुवाई के समय कार्बोफ्यूरान 3प्रतिशत दानेदार कीटनाशक 8 किग्रा प्रति एकड़ की दर से मृदा अनुप्रयोग करना चाहिए।

तना छेदक(स्टेम बोरर) : इसकी इल्लियां पत्तों के पोंगलों में प्रवेश करती है।तनों के अंदर वे सुरंग बनाती है। पौधे जब 25 से 35 दिनों की अवस्था के हो तब पत्तों के पोंगलों में कार्बोफ्यूरान 3 प्रतिशत दानेदार के 5 से 6 दाने प्रति पौधे डालना चाहिए।

ज्वार में कौन-कौन से रोग लगते हैं उनका प्रबंधन कैसे करें ?

शर्करा रोग (अर्गट) : यह रोग ज्वार में भुट्टे में सख्त भूरे रंग के सींग के समान संरचना दिखाई देती है जो कि रोग जनक के स्क्लेरोशिया होते है। इसके रोकथाम के लिए बीज बोने से पहले 20% नमक के घोल में डुबाकर बीज को स्क्लेरोशिया मुक्त कर उपचारित करना चाहिए।

दाने का फंफूदी रोग (ग्रेन मोल्ड) : दानों पर काली अथवा गुलाबी रंग की फफूंद की बढ़वार दिखाई देती है । दाने खाली रह जाते है, उनकी अंकूरण क्षमता भी कम हो जाती है। इसके नियंत्रण के लिए प्रोपीकोनाजोल / 200 मिली/एकड़ का फूल आने पर छिड़काव करें और 10 दिनों के बाद दूसरा छिड़काव करना चाहिए।

मृदु रोमिल आसिता : रोग से प्रभावित पौधे की पत्तियां हल्के पीले रंग की होती है। पत्तियों पर सूक्ष्म मृदु रोमिल वृध्दि दिखाई देते है। 5-6 सप्ताह बाद पत्तियों पर सफेद धारियां दिखाई देती है। बाद में पत्तियां फटकर चिथड़े हो जाती है।इसके नियंत्रण के लिए मेटालेक्जिल (एप्रनएसडी-35) 4 ग्राम/ कि.ग्रा. बीज से बीज उपचारित करना चाहिए। मेन्कोजेब 3 ग्राम/लीटर पानी की दर से छिड़काव करना चाहिए।

ज्वार की कटाई-गहाई कब और कैसे करें ?

फसल की कटाई कार्यकीय परिपक्वता आने पर करना चाहिये । ज्वार के पौधों की कटाई कर के ढेर लगा देते है। बाद में पौध से भुट्टों को अलग कर लेना चाहिए। भुट्टों से दाने निकालने हेतु थ्रेसर से गहाई करना चाहिए।

ज्वार के दानों का भण्डारण कैसे करें ?

दानों को सुखाकर जब नमी 10 से 12 प्रतिशत हो तब भंडारण करना चाहिए।

दीनदयाल शोध संस्थान
कृषि विज्ञान केन्द्र मझगवाँ, सतना (म.प्र.)
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : डॉ.अजय चौरसिया, मोबाइल नं. 9407018060, ईमेल : kvksatna@dri.org.in